सुविचार

कोयला और सोना दोनों एक ही आग में तपते हैं, पर कोयला दूसरे को जलाने के लिए जलता है, इसलिए बिखर जाता है और सोना दूसरों को सजाने के लिए जलता है इसलिए निखर जाता है। परिस्थिति कैसी भी हो, अंतर्मन के भावों की शुद्धता होना चाहिए।

आशा मानधन्या इंदौर

संपादकीय

अस्पतालों की जंग में मरीजों से लूट

बजाज एलियांज कंपनी को कैशलेस इलाज करने से बंद करने घोषणा की है। उनकी कंपनी 1 सितंबर से कैशलेस इलाज की सुविधा बंद हो जाएगी। इसके पहले भी बीमा कंपनियां के कैशलेस इलाज को लेकर तरह-तरह के नियम और कानून बनाकर अस्पतालों और बीमा कराने वालों के साथ विश्वासघात करती चली आ रही हैं। इस पर ना तो इरडा कोई कार्रवाई कर रहा है, नाही केंद्र सरकार इस संबंध में कोई निर्णय ले रही है। जिसके कारण बीमा होते हुए भी लोगों को इलाज की सुविधा नहीं मिल पा रही है। बीमा कंपनियां, प्रीमियम के रूप में भारी भरकम राशि वसूल कर लेती हैं। जब इलाज के बिल के भुगतान की बात आती है। तब बीमा कंपनियां तरह- तरह के नियम कानून बताकर अपना पल्ला झाड़ लेती हैं। बीमा कंपनियों की शिकायत है, अस्पताल में अनाप-शनाप पैसा मरीजों से वसूला जाता हैं। बीमा कंपनियों ने इस संबंध में स्वयं की ओर से विभिन्न इलाज और ऑपरेशन के रेट भी तय कर दिए हैं। उन रेट पर अस्पताल इलाज करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। जिसके कारण बीमा कंपनियों, अस्पतालों और स्वास्थ्य बीमा उपभोक्ताओं के बीच में लगातार तकरार देखने को मिलती है। देशभर के करीब 15000 अस्पताल जिसमें मैक्स, हेल्थ केयर और मेदांता जैसे अस्पताल भी शामिल है। उन्होंने बजाज एलियांज के पालिसी धारकों को कैशलेस इलाज की सुविधा उपलब्ध कराने से मना कर दिया है। देशभर में ऐसे लाखों बीमा उपभोक्ता हैं। जिन्हें अस्पतालों मे कैशलेस इलाज की सुविधा नहीं मिल रही है। अस्पतालों में जाकर बिल भरने के बाद, जब उपभोक्ता बीमा कंपनियों के पास भुगतान के लिए जाता है। तब उसमें तरह-तरह की आपत्तियां लगाई जाती हैं। बिल की राशि में से बहुत बड़ी राशि का भुगतान बीमा कंपनियां नहीं करती हैं। भुगतान में भी काफी विलंब किया जाता हैं। जिसके कारण लोगों में नाराजी बढ़ती चली जा रही है। भारत में लोगों का मेडिकल खर्च 7 से 8 फ़ीसदी की रफ्तार से हर साल बढ़ता जा रहा है। अस्पतालों के इलाज रेट भी बढ़ते चले जा रहे हैं। बीमा कंपनियों ने प्रीमियम भी पिछले वर्षों की तुलना में कई गुना बढ़ा दिया है। उसके बाद भी स्वास्थ्य बीमा करने वाले परिवारों को बीमा का लाभ नहीं मिल पा रहा है। उल्टे दो पाटों के बीच में फंसकर बीमा कंपनियां भी उन्हें लूट रही हैं। अस्पतालों में भी उनके साथ लूट हो रही है। अस्पतालों का कहना है, बीमा कंपनियों का आम इनपेनलमेंट एग्रीमेंट का मौजूदा ड्राफ्ट, बीमा कंपनियों द्वारा बिना अस्पतालों के विचार-विमर्श से तैयार किया गया है। बीमा कंपनियों की शर्तों अव्यवहारिक हैं। बीमा कंपनी अस्पतालों और इलाज के पर ध्यान नहीं देकर केवल अपने लाभ के लिए काम कर रही हैं। कई सालों तक बीमा कंपनियों द्वारा उन्हें अपडेट नहीं किया जाता है। जिसके कारण मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल में इलाज संभव नहीं होता है। कैशलेस इलाज की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए बीमा नियामक इरडा ने एक कॉमन इनपेनेलमेंट का प्रस्ताव रखा है। बीमा कंपनियों के अपने अलग तर्क हैं। इस झगड़े का खामीयाजा जिन लोगों ने मेडिकल पॉलिसी ली है। उनको भुगतान पड़ रहा है। बीमित परिवारों पर इलाज के समय दोहरी मार पड़ रही है। सरकार और बीमा कंपनियां बड़े-बड़े दावे जरूर करती हैं। वास्तविकता इसके ठीक उल्टी होती है। केंद्र सरकार जिस तरह से दवाइयां की कीमतें निर्धारित करती हैं। उसी तरह से मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल तथा सामान्य अस्पतालों के लिए अलग-अलग रेट तय किए जाएं। आयुष्मान योजना भी बीमा कंपनियों से जुड़ी हुई है। इसमें भी मरीजों को सही उपचार प्राप्त हो। बीमा कंपनियों की धोखाधड़ी और अस्पतालों की धोखाधड़ी पर नियंत्रण लगाने की जिम्मेदारी केंद्र सरकार और बीमा नियामक आयोग की है। सभी अपनी जिम्मेदारी से भाग नहीं सकते हैं। इस विषय पर जल्द से जल्द पहल की जानी चाहिए। इलाज के तौर-तरीके भी निरंतर बदल रहे हैं। समन्वय बनाने की जिम्मेदारी इरडा को उठाना चाहिए।

कुण्डली में चन्द्रमा किस ग्रह के साथ युति बनाकर बैठा है

1. चन्द्र व सूर्य युतिः अगर कुण्डली में चन्द्र के साथ सूर्य है तो आप कुटनीतिज्ञ होंगे ! इस युति के प्रभाव के कारण आपकी वाणी में नम्रता व कोमलता की कमी हो सकती है तथा आप अभिमानी हो सकते हैं, जिससे लोगों के प्रति आपका व्यवहार रूखा हो सकता है ! इन स्थितियों में सुधार के लिए आपको चन्द्र के उपाय करने चाहिए !

2.चन्द्र व मंगल युतिः अगर कुण्डली में मंगल के साथ चन्द्र स्थित है तो आप परिणाम की चिंता किए बगैर अपने कार्य में जुट जाते हैं ! ऐसा कभी-कभी आपके लिए परेशानियों का कारण भी बन जाता है! आपकी कुण्डली में चन्द्र-मंगल की युति है तो वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए बहुत ही आवश्यक होता है, क्योंकि बोल -चाल में आप आक्रोशित होकर ऐसा कुछ बोल सकते हैं जिनसे लोग आपसे नाराज हो सकते हैं !

3. चन्द्र व बुध युति : कुण्डली में चन्द्र के साथ बुध की युति शुभ फल देने वाली होती है !अगर आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों की युति बन रही है तो आप कूटनीतिज्ञ हो सकते हैं, आपको अपनी वाणी से लोगों को आसानी से जितना अच्छी तरह आता है,जिससे व्यावसायिक क्षेत्रों में आपको अच्छी सफलता मिलती है!

4. चन्द्र व गुरू युति : कुण्डली में चन्द्र के साथ गुरू की युति होना यह बताता है कि आप ज्ञानी होंगे, आपको शिक्षक एवं सलाहकार के रूप में अच्छी सफलता मिलेगी लेकिन आपको इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि मन में अभिमान की भावना नहीं आये ! इसके अलावा बिना मांगे किसी को सलाह न दें क्योंकि बिना मांगे दी गई सलाह के कारण लोग आपसे दूरियां बनाने की कोशिश करेंगे !

5.चन्द्र व शुक्र युति : जिस व्यक्ति की कुण्डली में चन्द्रमा शुक्र के साथ युति सम्बन्ध बनाता है वह सौन्दर्य प्रिय होते हैं ! अगर आपकी कुण्डली में भी इन दोनों ग्रहों का युति है तो आप अधिक सफाई पसंद व्यक्ति होंगे,कला के क्षेत्रों से आपका लगाव रहेगा, आप लेखन में भी रूचि ले सकते हैं ! अतः आपको आलस से दूर रहना चाहिए, दिखावे की प्रवृति से भी आपको बचन चाहिए ! सुखों की चाहतों के कारण आप थोड़े आलसी हो सकते हैं !

6.चन्द्र व शनि युति : अगर आपकी कुण्डली में चन्द्र व शनि की युति है तो आप ईमानदार, न्यायप्रिय मेहनती एवं परिश्रमी भी होंगे और मेहनत के दम पर जीवन में कामयाबी की तरफ अग्रसर होंगे ! न्यायप्रियता के कारण अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने से पीछे नहीं हटेंगे ! इस युति के प्रभाव के कारण कभी-कभी आप निराशावादी हो सकते हैं जिससे मन दुःखी हो सकता है ! अतः आपको आशावादी बने रहना चाहिए !

7. चन्द्र व राहु युति : चन्द्र व राहु की युति कुण्डली में होने पर व्यक्ति रहस्यमयी विद्याओं में रूचि रखते हैं ! अगर आपकी कुण्डली में चन्द्र व राहु की युति बन रही है तो शिक्षा प्राप्त कर आप वैज्ञानिक बन सकते हैं, शोध कार्यों में भी आपको अच्छी सफलता मिल सकती है!

8.चन्द्र व केतु युति : कुण्डली में चन्द्र के साथ केतु की युति होने पर व्यक्ति को समझ पाना कठिन होता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति कब क्या कर बैठे यह समझना मुश्किल होता है! आप लिए उचित होगा किसी भी कार्य को करने से पूर्व उस पर अच्छी तरह विचार करलें अन्यथा अपने कार्यों के कारण आपका मन दुःखी हो सकता है! आपमें अच्छी बात यह है कि अपनी ग़लतियों से सबक लेंगे और अपने आस-पास की बुराईयों को दूर करने की कोशिश करेंगे! जन्म पत्रिका में किसी एक स्थान पर राहू एवं चंद्रमा की स्थिति हो तो चंद्र ग्रहण योग बनता है। इसमें भी राहू एवं चंद्रमा के अंशों में नौ अंश से कम का अंतर हो तो ग्रहण योग बनता है, परंतु नौ अंश से अधिक के फासले पर यह योग प्रभावकारी नहीं होता है। यदि दोनों ग्रहों की दूरी सात अंश से कम की हो तो इस योग का फल अधिक पड़ता है। राहू-चंद्रमा का अंतर डेढ़ अंश से कम होने पर यह योग पूर्ण प्रभावकारी रहता है।

राहू-चंद्रमा के योग का फल–

1. प्रथम भाव- में हो तो खर्च दोष, दाँत का देरी से आना एवं धन संचय का योग बनता है।
2. द्वितीय भाव- में खुद के परिश्रम से धन प्राप्त करना, खाने के शौकीन होना एवं बचपन में कष्ट पाने का योग बनता है।
3. तृतीय भाव- में राहू-चंद्र की युति से शांत प्रकृति वाले, प्रसिद्धि पाने वाले एवं दाहिने कान में तकलीफ की संभावना आती है।
4. चतुर्थ भाव- में जन्मभूमि से दूर जाना पड़ता है, मेहनत से प्रगति करते हैं । दान की प्रवृत्ति अधिक होती है।
5. पंचम भाव- में राहू-चंद्र का ग्रहण जातक को बुद्धिमान, ईश्वर भक्त और कामी बनाता है।
6. छठे भाव- में शरीर निरोगी रहता है। शत्रु बहुत उत्पन्न होते हैं, लेकिन जल्दी ही समाप्त हो जाते हैं। मातृपक्ष की चिंता होती है।
7. सप्तम भाव- में ग्रहण योग दाम्पत्य जीवन को अच्छा करता है। व्यापार में हानि का योग बनता है, पलायनवादी दृष्टिकोण को जन्म देता है।
8. आठवें भाव- में राहू-चंद्र की युति से अल्पायु में प्रसिद्धि मिलती है, स्त्री से धन प्राप्त होता है, आर्थिक हानि उठाना पड़ती है।
9. नौवें भाव- में संतान की प्रगति होती है, लंबे प्रवास का योग बनता है, धार्मिक कार्य करते हैं और आलस्य आता है।
10. दशम भाव- में योगी, हल्का व्यापार करने वाला एवं सामाजिक कार्य में संलग्नता का फल देता है।
11. ग्यारहवें भाव- में चंद्र-राहू की युति काम से प्रसिद्धि दिलाती है। अनैतिक तरीके से धन एकत्र करने पर परेशानी उठाना पड़ती है। आँख या कान के रोग उत्पन्न होते हैं।
12. बारहवें भाव- में इस योग का फल कुशल व्यवसायी के रूप में मिलनसारिता के रूप में एवं दाम्पत्य जीवन में तनाव की स्थिति उत्पन्न करता है।

गुरु महेश जैन
इंटरनेशनल ज्योतिषाचार्य
अनुष्ठानकर्ता
राणापुर जिला झाबुआ
मध्यप्रदेश
7000098868

वर्तमान जीवन में नवरस

पहले मानव जीवन में रस था अब रसहीनता है।भौतिक सभ्यता की प्रधानता और वैज्ञानिक प्रगति ने हमें निरंतर शुष्क और कठोर बनाया है पर हमारा ध्यान इस ओर किंचित भी नहीं गया।आजकल सबका ध्यान केवल अर्थ की दिशा में है।नवरस का उल्लेख केवल साहित्यिक चर्चाओं में ही सुनने-पढ़ने को मिलता है, वर्तमान जीवन में या संबंधों में नहीं।

वाक्यं रसात्मकं काव्यम् कहकर आचार्यों ने सर्वसम्मति से नवरस का महत्व बताया है।भरत मुनि ने आठ रसों का उल्लेख किया लेकिन बाद में शांत रस को भी जोड़कर नवरस की धारणा विकसित हुई जो निम्नानुसार हैं-श्रृंगार ,हास्य ,करुण, रौद्र ,वीर ,भयानक ,वीभत्स, अद्भुत और शान्त। मानवीय वृत्तियों के वर्णन, कृतियों के साहित्यिक विमर्श और उसके गुणदोषों की चर्चा के लिए यह प्राचीनकाल से हमारे जीवन-सभ्यता-साहित्य-संस्कृति के आवश्यक अंग रहे हैं।वाल्मीकि कृत रामायण ,कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुन्तलम आदि अनेक ग्रंथों में इनकी सुन्दर अभिव्यक्ति है।आज यह नवरस हमारे अपने सगे सम्बंधियों के व्यवहार की तरह हमारे जीवन से मुंह मोड़ रहे हैं। वर्तमान जीवन में श्रृंगार आधा अधूरा रह गया है।काम का बोझ इतना अधिक है कि आनंद की अनुभूति के लिए भी किसी के पास समय नहीं है। आधी जवानी निकलने के बाद विवाह के बारे में सोचते है और कर भी लें तो साल दो साल में मनमुटाव से संबंध विच्छेद हो जाते हैं।फिर श्रृंगार के संयोग पक्ष की तुलना में वियोग ही जीवन को अधिक आच्छादित करता है।वीर रस केवल टी.वी. चैनलों पर पड़ोसी देश की चर्चा के समय ही उमड़ता है।युद्ध के विवरण और दृश्य अब पहले जैसे कहां ?आल्हा ऊदल के किस्से या हल्दी घाटी की लड़ाई के वर्णन सुनने भी कहां मिलते हैं जो भुजायें फड़कने लगें।यद्यपि लड़ाई अच्छी बात नहीं है पर जहां लड़ाई होती है वहां से दो दिन में शांति की अपीलें आने लगती हैं।घर में घुसकर मारने की धमकी देने वाले शत्रु को राष्ट्र दिवस की बधाई देकर क्षमा वीरस्य भूषणम् कहने लगते हैं।हास्य और शांत रस का लोप हो गया है।हंसने के लिए टी. वी. चैनलों पर शो देखना पड़ता है। रौद्र जो संभवतः शिव के रुद्रों से विस्तारित हुआ होगा गलत लोगों द्वारा हमें दिन-प्रतिदिन प्रभावित कर रहा है।भयानक रस का अनुभव इसलिए होता है क्योंकि हम मुखौटा ओढ़े हिंसक प्राणियों के संसर्ग में रहते हैं।नगरीय प्रशासनिक व्यवस्थाओं से हमें वर्षा काल में वीभत्स का अनुभव होता है। करुण जीवन में प्रधानता से है क्योंकि यही हमारे जीवन में सर्वाधिक है। अपने लिए भी ,दूसरों के लिए भी।क्या करें । शोक करुण रस के लिए स्थाई भाव है अतः मृत्यु से शोक होकर करुणा उपजनी चाहिए रोज दुर्घटनाएं हो रही हैं सब मजे से अखबार पढ़ते हैं, टी.वी. पर सुनते हैं किंतु न किसी को शोक होता है और न किसी के प्रति करुणा उपजती हैं। अद्भुत रस जैसा भी जीवन में कुछ बचा नहीं।विस्मय ही नहीं है जो हो जाये वह प्रत्याशित है।बुरी से बुरी घटना ,कोई भी व्यक्ति या परिस्थिति अप्रत्याशित नहीं लगती फिर विस्मय कहां से होगा ? जीवन में शांति ही नहीं है तो शांत रस कहां से आएगा ?पहले तो बुद्ध और महावीर जैसे महापुरुषों ने इसकी प्रतीति भी कराई अब तो विचन्मयानंद झांसाराम जैसे औतारी पुरुष मिलते हैं।इन्हें अपनी क्रीड़ाओं से फुरसत नहीं है निवेंद को कहां उपलब्ध होंगे?

जब इन नव रसों पर प्रश्नचिन्ह लगे तो आधुनिक कविता ने रस की अवधारणा को सिरे से नकार दिया।नई कविता ने अपनी अलग दुनिया बना ली आदमी ने अलग।बस आजकल का जीवन भी नई कविता जैसा है बौद्धिक पर सूखा और नीरस।

डॉ महेन्द्र अग्रवाल
सदर बाजार शिवपुरी म प्र
9425766485

आप के साथ

कहानी

महेश जी, आज आपके साथ ही चलूँगा. आज तो स्कूटर चालू ही नहीं हुआ. ठीक! रमेश जी. स्कूटर खराब है तो छोड़िए. आओ, बैठो चलते हैं.

महेश जी के स्कूटर के पीछे विराजमान रमेश जी ठाट से स्कूल पहुँच गए. दोनों एक ही स्कूल में कार्यरत थे. पास-पास में मकान. अदद पड़ोसी. यह क्रम सात दिन अविरल चला.

रमेश जी सुझाव देते हुए कहा, महेश जी! क्यों न हम एक ही स्कूटर पर आया करें? एक सप्ताह मेरा स्कूटर और एक सप्ताह आपका स्कूटर. महंगे भाव का हमारा आधा-आधा पेट्रोल भी बचेगा.

बात तो ठीक है. महेश जी ने अनमने भाव से कहा. रमेश जी के स्वार्थी व्यवहार को जानते थे परन्तु अपने लौकिक व्यवहार के कारण लगभग स्वीकृति दे दी.

अगले सप्ताह रमेश जी के स्कूटर से दोनों आये गए. तीन दिन बाद ये स्कूटर फिर बिदक गया. धक्के देकर जैसे तैसे घर पहुँचे. अगले दिन महेश जी को ही कमान संभालनी पड़ी. अपने स्कूटर से उन्हें भी ले गए.

आये दिन रमेश जी का स्कूटर परेशान करने लगा तो मिस्त्री तक ने कह दिया, इसे बीस साल चला लिया अब तो कबाड़ी को देने में ही फायदा है. खैर! महेश जी, रमेश जी को अपने स्कूटर पर बैठाकर एक साल फिर दूसरे साल तक यूँ ही ढोते रहे. महेश जी, अच्छे पड़ोसी के नाते ग़म निगलते हुए पेट्रोल के पैसे भी लेने से मना कर दिया. आखिर रमेश जी से तब पीछा छूटा जब रमेश जी ट्रांसफर हुआ. मित्रगण महेश जी की तारीफ करते कि पड़ोसी हो तो ऐसे. महेश जी धर्मसंकट में सुनते कि ये मित्र तारीफ कर रहे है या मूर्खता का प्रमाण बता रहे हैं.

मोहनलाल जाँगिड़, बीकानेर

कुत्ते बड़े बड़भागी

इन दिनों कुत्ते चर्चा के केंद्र में हैं।इस हद तक कि सारा देश कुत्तामय नजर आने लगा है।संसद से लेकर सड़क तक कुत्ते और सिर्फ कुत्ते ही छाए हुए हैं।

वैसे देखा जाए तो कुत्ते के गले में कोई प्रशंसापत्र नहीं लटक रहा है सिवा इसके कि कुत्ता एक वफादार प्राणी है।इसे छोड़ दें तो कुत्ता हीनता और तुच्छता का ही पर्याय है।अन्यथा क्यूं बोलचाल में ऐसा कहा जाता , साला कुत्ते की मौत मरेगा, कुत्ते जैसी कदर हो गई है , कुत्ते जैसा टुकड़खोर हो गया है , , देखो ,कैसा कुत्ते जैसी पूंछ हिला रहा है , कुत्ते जैसा हड़किया हो गया है वगैरह वगैरह।

जैसे घूरे के दिन फिरते हैं ऐसे कुत्ते के भी दिन दिन फिरे हुए हैं।अखबारों के पन्नों से लेकर टीवी के पर्दे पर और सोशल मीडिया पर कुत्ता छाया हुआ है।जितनी बहस इंसान की पैदाइश,भूख,बीमारी ,हिफाजत और मौत पर नहीं होती है उससे कहीं ज्यादा कुत्ते के जन्म,पैदाइश और मौत पर हो रही है।कुत्ते की सुरक्षा की गारंटी मांगी जा रही है।सम्मानजनक मौत की मांग की जा रही है।लोग दमदारी से तर्क दे रहे हैं कि कुत्ता होने का मतलब यह तो नहीं कि वह कुत्ते की ही मौत मरे।जब इंसान इंसान की मौत नहीं मरता है तो फिर कुत्ता कुत्ते की मौत क्यों मरे ? कुत्ते को लेकर इंसानों में खेमेबाजी हो गई है।खेमे एक दूसरे पर कुत्ते की तरह गुर्रा रहे हां, भौंक रहे है ,लपक रहे हैं।संसद ,सड़क ,चौराहे,होटलें,नाई की दुकानें और गप्प गोष्ठियों तक में कुत्ते बहस का मुद्दा बना हुआ है।सच में कुत्ते बड़े बड़भागी हैं।कुत्तों के जिस तरह से दिन फिरे है उसको देखते हुए इंसानों को इर्ष्या होने लगी है खास कर गरीबों को।वे सोचने लगे है हम भी कुत्तों की तरह बड़भागी होते।

रमेशचंद्र शर्मा....

कहानी

रिश्ता मॉल

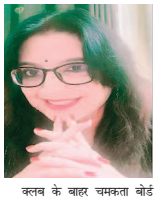

मैंने अवाक होकर पूछा–इसमें भी इतनी वैरायटी!

वह मुस्कराई–

जी रखनी पड़ती है सर। क्लाइंट की अलग -अलग डिमांड के हिसाब से! यू नो न सर! ज्यादातर शादियां तो क्लब के बाहर चमकता बोर्ड था!

एक्स्ट्रा रिलेशनशिप क्लब!

शादी से बोर हो गए? यहाँ पाएं नया ऑफर!

जिज्ञासा हुई तो भीतर चला गया।

रिसेप्शनिस्ट ने स्वागत किया।

जी सर बोलिए आपको क्या चाहिए!

मैंने झिझकते हुए पूछा -

वो...बाहर बोर्ड देखा तो...मतलब क्या है ये!

जी ये एक्स्ट्रा रिलेशनशिप क्लब लांच किया है हमने। आज के समय की डिमांड के हिसाब से! आप बोलिए आपको किस तरह का रिश्ता चाहिए? कई पैकेज हैं -

इमोशनल पैकेज, सिर्फ टाइमपास पैकेज, या फिर प्रीमियम अफ़ेयर? हम उन्हें उनकी पसंद और बजट के हिसाब से सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं।

मेरे होंठों पर कटाक्ष तैर गया–तो फिर परिवार का क्या?

रिसेप्शनिस्ट के चेहरे पर व्यंग्यात्मक हंसी आई!

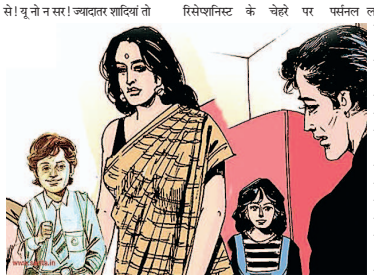

अब कॉन्ट्रैक्ट है और कॉन्ट्रैक्ट में टर्म्स एंड कंडीशन्स बदलते रहते हैं! पति-पत्नी दोनों ही हमारे क्लाइंट होते हैं। कभी पत्नी 'स्पेस' मांगती है, कभी पति 'नया एक्सपीरियंस! तो परिवार भी हमारे पास पैकेज में है। बच्चों के लिए वीकेंड डैड/मॉम सर्विस, सास-ससुर के लिए केयर-टेकर।

बस आप रिश्तों का असली स्वाद हमारे मॉड किचन से लीजिए।

मैंने धीरे से कहा–मतलब अब वफ़ादारी भी आउटसोर्स?

वह हंसी!

सर, वफादारी अब ओल्ड-फ़ैशन प्रोडक्ट है! आजकल सबसे ज़्यादा बिकता आइटम है एस्केप! हर कोई अपने ही रिश्तों से भागना चाहता है। जिम्मेदारी पूरी करना और अपनी पर्सनल लाइफ एंजॉय करना यही उनकी प्रायोरिटी है अब! आपके लिए कौन सा पैकेज फाइनल करूं!

जी धन्यवाद! अभी मेरे घर के हालात इतने बुरे नहीं हुए कि ऐसे पैकेज तलाश करने की नौबत आए, न हमें इतने स्पेस की जरूरत है जिसमें मैं खुद को ही इतना अकेला कर दूं! हमने स्पेस शब्द को ही अपने घर में स्पेस नहीं दी मैडम!

कहते हुए मैं भारी मन से बाहर निकला तो लगा...

समाज क्लब नहीं, रिश्तों का एक बड़ा मॉल बन गया है!

मौसमी चंद्रा
पटना बिहार